होता है।

प्रत्यय

'प्रत्यय' दो शब्दों से बना है–प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ है 'साथ. में, पर बाद में'; जबकि 'अय' का अर्थ 'चलने वाला' है। अतः 'प्रत्यय' का अर्थ हुआ, 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलने वाला या लगने वाला।'

प्रत्यय किसी भी सार्थक मूल शब्द के पश्चात् जोड़े जाने वाले वे अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में या भाव में परिवर्तन कर देते हैं अर्थात् शब्द में नवीन विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या अर्थ बदल देते हैं।

जैसे– सफल + ता = सफलता
अच्छा + आई = अच्छाई

यहाँ 'ता' और 'आई' दोनों शब्दांश प्रत्यय हैं, जो 'सफल' और 'अच्छा' मूल शब्द के बाद में जोड़ दिए जाने पर 'सफलता' और 'अच्छाई' शब्द की रचना करते हैं।

प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं

1. कृत प्रत्यय (क्रिया या धातु प्रत्यय)
2. तद्धित प्रत्यय (गैर-धातु या क्रिया प्रत्यय)

1. कृत प्रत्यय (क्रिया या धातु प्रत्यय)

क्रिया या मूल 'धातु' के अंत में जो प्रत्यय जुड़क रसंज्ञा अथवा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं और उनके मेल से बने शब्द को 'कृदंत' कहा जाता है। *जैसे–*

पढ़ाई = पढ़ + आई
सुनवाई = सुन + वाई

इसमें 'आई' और 'वाई' प्रत्यय हैं। *कुछ अन्य उदाहरण–*

धातुरूप		प्रत्यय		शब्द
ठहर	+	ना	=	ठहरना
लिख	+	ना	=	लिखना
खरीद	+	ना	=	खरीदना
फूट	+	ता	=	फूटता
मार	+	ता	=	मारता
क्रीड़	+	आ	=	क्रीड़ा
हँस	+	ई	=	हँसी
ढक	+	अन	=	ढक्कन
तैर	+	आक	=	तैराक
कट	+	आव	=	कटाव

2. तद्धित प्रत्यय (गैर-धातु या क्रिया प्रत्यय)

जो शब्दांश (प्रत्यय) धातुओं या क्रियाओं को छोड़कर अन्य शब्दों अर्थात् संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि शब्दों के बाद में या अंत में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितांत' कहा जाता है।

*जैसे–*बनारस + ई = बनारसी, बंगाल + ई = बंगाली

यहाँ 'बनारस' और 'बंगाल' दोनों संज्ञा हैं। संज्ञा के साथ 'ई' प्रत्यय लगकर नवीन शब्द का निर्माण हुआ है।

कुछ अन्य उदाहरण–

पन (सीधा + पन) = सीधापन
इयल (दाड़ी + इयल) = दड़ियल
इक (व्यापार + इक) = व्यापारिक
दार (जागीर + दार) = जागीरदार
ता (प्रधान + ता) = प्रधानता
इता (विलास + इता) = विलासिता
शील (भ्रमण + शील) = भ्रमणशील
ई (यायावर + ई) = यायावरी
एरा (चाचा + एरा) = चचेरा
नी (ऊँट + नी) = ऊँटनी

स्मरणीय तथ्य

'आ' प्रत्यय कृत और तद्धित दोनों हैं। छात्रों को ध्यान देना होगा कि यह क्रिया या धातु रूप में लगा है या संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण रूप में।
यदि भूख + आ = भूखा है, तो तद्धित प्रत्यय है और यदि भूल या भटक, सोच, समझ + 'आ' है, तो कृत प्रत्यय होगा।

कई प्रत्यय ऐसे ही होंगे, जिन्हें कृत और तद्धित के रूप में अलग-अलग करने के लिए छात्रों को ध्यान देना होगा; जैसे–

ईन (नमकीन, रंगीन)
एलू (घरेलू)
ची (अफीमची, तोपची, खजांची)
तम (उच्चतम, श्रेष्ठतम)
व (लाघव, गौरव, शैशव)
ई (धन + ई = धनी)
ऊ (पेटू, चालू)
ऐल (गुस्सैल)
ड़ा (दुखड़ा, मुखड़ा, बछड़ा)
ईय (स्वर्गीय, भारतीय)
नीय (दर्शनीय, आदरणीय)
ईना (पसीना, महीना) आदि।

class 9th
hindi
date 10/4/20

प्रत्यय और उपसर्ग का एक साथ प्रयोग

उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय		नया शब्द
वि	+	ज्ञापन	+	इत	=	विज्ञापित
बे	+	चैन	+	ई	=	बेचैनी
अप	+	मान	+	इत	=	अपमानित
अ + वि	+	कार	+	ई	=	अविकारी
उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी
अनु	+	मान	+	इत	=	अनुमानित
अति	+	अधुना	+	इक	=	अत्याधुनिक
अ	+	धर्म	+	इक	=	अधार्मिक
दुस्	+	साहस	+	ई	=	दुस्साहसी
बद	+	चलन	+	ई	=	बदचलनी
अ + प्रति	+	आशा	+	इत	=	अप्रत्याशित
परि	+	पूर्ण	+	ता	=	परिपूर्णता
अ	+	लोक	+	इक + ता	=	अलौकिकता
निर्	+	दया	+	ई	=	निर्दयी
अ	+	परिवार	+	इक	=	अपारिवारिक
अभि	+	मान	+	ई	=	अभिमानी
उप	+	स्थित	+	इ	=	उपस्थिति

revise it properly